



P-ISSN: 2394-1685
E-ISSN: 2394-1693
Impact Factor (ISRA): 5.38
IJPESH 2017; 4(4): 490-492
© 2017 IJPESH
www.kheljournal.com
Received: 09-05-2017
Accepted: 15-06-2017

डॉ० अनिल कुमार मिश्र

एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा
खेल एवं योग विज्ञान संस्थान डॉ
राम मनोहर लोहिया अवध
विश्वविद्यालय अयोध्या उत्तर प्रदेश,
भारत

शारीरिक शिक्षा द्वारा छात्रों में नेतृत्व कौशलों के विकास का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० अनिल कुमार मिश्र

सारांश

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा प्रणाली के अभिन्न अंग के रूप में खेल एवं शारीरिक शिक्षा मॉडल द्वारा शिक्षार्थियों में नेतृत्व (लीडरशिप) गुणों के विकास पर चर्चा करना है। चूंकि शारीरिक शिक्षा, संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक अति महत्वपूर्ण अंग है। अतः शारीरिक शिक्षा एक विषय के रूप में मानव संसाधनों के विकास को प्रभावित करने में समर्थ है। इसके अंतर्गत उद्देश्यों को आधार प्रदान करने हेतु भरतपुर राजस्थान के 80 विद्यार्थियों पर शोध कार्य किया गया है जिन्हें सामान्य शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों तथा शारीरिक शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों में वर्गीकृत कर, रॉबर्ट वुड जॉनसन द्वारा निर्मित प्रश्नोत्तरी विधि का प्रयोग किया गया है।

मूल शब्द:- नेतृत्व, शारीरिक शिक्षा, रॉबर्ट वुड जॉनसन, निर्णय क्षमता।

प्रस्तावना

नेतृत्व क्षमता को एक स्वस्थ व्यक्तित्व का परिचायक माना गया है। व्यक्तित्व का विकास किसी भी व्यक्ति के उन गुणों से संबंध रखता है जिन्हें वह व्यक्ति या तो जन्मजात अर्जित करता है या फिर किसी व्यक्ति या शिक्षा द्वारा सीख कर ग्रहण करता है। शारीरिक शिक्षा के संबंध में नेतृत्व का विकास अथवा नेतृत्व कौशल को अर्जित करना शिक्षा व्यवस्था की एक अमूल्य उपलब्धि है। वास्तव में नेतृत्व कौशल द्वारा ही कोई भी छात्र/छात्रा किसी भी समूह को नियंत्रित कर सकता है अथवा उस दल या समूह का मुख्य तथा अति महत्वपूर्ण अवयव बन जाता है।

कोन्टज़ तथा ओ'डॉनेल के अनुसार, "नेतृत्व एक प्रबंधक की वह क्षमता है जिसके द्वारा वह अपने अधीनस्थों को विश्वास और जोश के साथ काम करने के लिए प्रेरित करता है।"

मॉण्टगुमरि के अनुसार, "किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए व्यक्तियों को इकट्ठा करने की इच्छा तथा योग्यता को ही नेतृत्व कहा जाता है।"

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर के बालक तथा बालिकाओं के मध्य सामान्य शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा द्वारा उत्पन्न नेतृत्व कौशल का तुलनात्मक अध्ययन करना है जिस हेतु भरतपुर(राजस्थान) के कुल 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसके अंतर्गत 40 विद्यार्थी सामान्य शिक्षा प्राप्त करने वाले बालक बालिकायें हैं तथा शारीरिक

Correspondence

डॉ० अनिल कुमार मिश्र

एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा
खेल एवं योग विज्ञान संस्थान डॉ
राम मनोहर लोहिया अवध
विश्वविद्यालय अयोध्या, उत्तर प्रदेश,
भारत

शिक्षा प्राप्त करने वाले 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यालय स्तर पर शिक्षण संस्थानों में क्रियावित शारीरिक शिक्षा मॉडल की समीक्षा करना है जिसके आधार में व्यक्तित्व विकास के एक अति महत्वपूर्ण कारक नेतृत्व कौशल को केंद्र में रखा गया है। शारीरिक शिक्षा द्वारा किस प्रकार विद्यार्थियों में नेतृत्व रूपी गुणों का विकास होता है, यह अध्ययन इस उद्देश्य की भी पुष्टि करता है। अध्ययन के अंतर्गत द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त अध्ययनों के निष्कर्षों, आंकड़ों, चर्चित शिक्षाविदों के अनुभव तथा ज्ञान को आधार बनाया गया है।

अध्ययन प्रविधि

अध्ययन प्रविधि के रूप में उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इस अध्ययन में Robert Wood Johnson द्वारा निर्मित प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया गया है। जिसके अंतर्गत 6 नेतृत्व कौशल बिंदुओं को आधार बनाकर उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास किये गए हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण

Group	Mean	SD	MD	S. E	t Ratio
शारीरिक शिक्षा	189.66	21.77	11.93	5.29	2.555
सामान्य शिक्षा	177.73	25.44			

Significant at 0.05 level

$t(0.05) = 1.960$

प्राप्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों के नेतृत्व कौशल जैसे आत्म विश्वास, टीम नियंत्रण, दबाव नियंत्रण, टीम सहयोग भावना, निर्णय लेने कौशल का विकास तुलनात्मक रूप से सामान्य शिक्षा पाने वाले बालकों में कोई भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। शारीरिक शिक्षा वाले बालकों में सामाजिक गुण भी अधिक पाए गये। अतः यह सिद्ध हुआ है कि किस प्रकार खेलों तथा शारीरिक शिक्षा के योगदान ने बालकों के व्यक्तित्व को प्रभावित किया है।

नेतृत्व कौशल विकास के विभिन्न आयाम

दल नियंत्रण (Team Management) कौशल का विकास-

शारीरिक शिक्षा का संबंध खेल खेल में शिक्षा से अथवा ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जो शिक्षार्थियों के शारीरिक विकास के अतिरिक्त मानसिक विकास तथा संवेगात्मक विकास की भी व्याख्या करती है। खेलों में भाग लेने वाले शिक्षार्थियों में अपनी टीम अथवा दल के नेतृत्व करने वाले गुणों का विकास सर्वाधिक होता है। इनमें अपनी टीम के प्रत्येक सदस्य को नियंत्रित करने तथा खेलों के दौरान प्रत्येक स्थितियों में दल की अगुवाई करने जैसे संवेदनशील कौशल विकसित हो जाते हैं।

सहयोग कौशल का विकास

शारीरिक शिक्षा शिक्षार्थियों में संवेगों के विकास को प्रभावित करती है उक्त संवेगों द्वारा ही सहयोग की भावना का विकास होता है जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण सामूहिक खेलों में प्रदर्शन के दौरान दिखाई देता है जिसके अंतर्गत एक ही टीम के खिलाड़ियों में परस्पर सहयोग द्वारा प्रतिद्वंद्वी टीम पर लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रयास किया जाता है अथवा सफलता अर्जित की जाती है।

निर्णय (Discussion) कौशल का विकास

निर्णय क्षमता का विकास बच्चों के भीतर उन परिस्थितियों में होता है जब उसके समक्ष सटीक विकल्प का चयन करने का अवसर होता है। शारीरिक शिक्षा के संदर्भ में इसका उद्देश्य खेलों के दौरान उत्पन्न विपरीत स्थितियों में अपनी टीम या दल की सफलता हेतु सही विकल्प का चयन करके खिलाड़ियों में निर्णय क्षमता विकसित होने लगती है। जिसे हम प्रायः खेलों के दौरान खिलाड़ियों द्वारा अपने आश्चर्य चकित कर देने वाले निर्णयों के रूप में देखते हैं।

आत्म विश्वास कौशल का विकास

आत्म विश्वास का संबंध स्वयं पर विश्वास से है अतः खेल खिलाड़ियों को आत्म विश्वास से युक्त बनाते हैं। शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत आने वाली समस्त शारीरिक क्रियाओं योग, खेल, उछल कूद, भाग दौड़ आदि शारीरिक विकास को तो प्रभावित करते ही हैं इसके अतिरिक्त यह मानसिक रूप से भी खिलाड़ियों को मजबूत करते हैं। आत्म विश्वास इसी मानसिक विकास का एक अति महत्वपूर्ण कारक है।

जॉन्स, जीन एलेन (1997) ने "खिलाड़ियों की निसंपादन क्षमता में आत्मविश्वास की भूमिका अध्ययन" शीर्षक पर पी.एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्षों में यह पाया कि निम्न आत्मविश्वास एवं खेल प्रदर्शन में सार्थक सम्बन्ध पाये जाते हैं। जिन खिलाड़ियों का आत्मविश्वास निम्न था उनकी खेल निष्पादन क्षमता भी निम्न पाई गई। इसके विपरीत उच्च आत्मविश्वास वाले खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ भी उच्च स्तर की पायी गईं।

दबाव (Pressure) नियंत्रण कौशल का विकास

शारीरिक शिक्षा शिक्षार्थियों की मानसिक जटिलता को दृढ़ता प्रदान करती है। जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक क्रियाओं द्वारा जटिल से जटिल स्थितियों द्वारा मानसिक संतुलन बना रहता है। खेलों के दौरान विपरीत स्थितियों में कुशल नेतृत्व कर्ता खेलों में संभावित परिणामों से पिछड़ जाने की स्थिति में उत्पन्न दबाव हो या विरोधी टीम द्वारा आक्रामक खेल प्रदर्शन का दबाव को पूरे

संयम से नियंत्रित करता है और अंततः सफलता प्राप्त करता है। दबाव नियंत्रण कौशल का विकास निरंतर शारीरिक क्रियाओं के सक्रिय संचालन तथा सामूहिक खेलों के दौरान उत्पन्न विपरीत परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होता है।

संबंधित साहित्य का अवलोकन

दुबे लक्ष्मीनारायण (1995) ने "खिलाड़ियों के समायोजन एवं नेतृत्व गुणों का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया, तथा निष्कर्ष के रूप में यह पाया कि सामूहिक खेलों के खिलाड़ियों का गृह, स्वास्थ्य, संवेगात्मक और समायोजन एकल खेलों के खिलाड़ियों की अपेक्षा अधिक अच्छा पाया गया परंतु शैक्षिक क्षेत्र के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। कुल समायोजन की दृष्टि से सामूहिक खेलों के खिलाड़ी, एकल खेलों के खिलाड़ियों से अधिक अच्छे पाए गए। सामूहिक खेलों के खिलाड़ियों में, एकल खेलों के खिलाड़ियों की अपेक्षा, खिलाड़ी भावना, जोखिम उठाने की क्षमता, उत्तरदायित्व, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प संबंधी गुणों में श्रेष्ठ ना पाई गई। जबकि दोनों प्रकार के खिलाड़ियों में चरित्र एवं बौद्धिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सामूहिक खेलों के खिलाड़ी एकल खेलों के खिलाड़ियों की अपेक्षा उत्तम स्थिति में पाए गए।

शुक्ला, राजवीर (2011) ने माध्यमिक विद्यालय स्तर पर खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों तथा खेलों में भाग नहीं लेने वाले विद्यार्थियों में खेल भावना तथा व्यक्तित्व रूपी करो के विकास का अध्ययन करने की दृष्टि से तुलनात्मक शोधकार्य किया। अपने अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों में उन्होंने यह पाया कि खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों तथा खेलों में भाग नहीं लेने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व रूपी गुणों में सार्थक अंतर पाया जाता है। खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में तुलनात्मक रूप से खेल भावना, नेतृत्व भावना, सहयोग भावना, दबाव नियंत्रण भावना तथा बेहतर परीक्षा परिणाम अर्जित करने जैसे कौशलों का विकास अत्यधिक पाया जाता है। इसके अतिरिक्त खेलों में भाग लेने वाले अतिरिक्त समायोजन शील तथा श्रेष्ठ होते हैं।

निष्कर्ष

उक्त अध्ययन के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में हो रही नवीन शोधों तथा इसके विस्तार ने भारत में शारीरिक शिक्षा तथा खेलों के क्षेत्र में एक गतिशील उपलब्धि को प्राप्त करने के प्रयास किये हैं। परंतु विश्व स्तर के राष्ट्रीय से भारत की तुलना की जाए तो शारीरिक शिक्षा मॉडल के परिणाम संतोषजनक नहीं दिखाई देते हैं। इस दिशा में सफलता के अवसरों को और उभारा जा सकता है बशर्ते

इस उद्देश्य हेतु शारीरिक शिक्षा विषय को अन्य विषयों जैसे विज्ञान, गणित, अंग्रेजी आदि द्वारा अतिक्रमित ना किया जाए अथवा शारीरिक शिक्षा विषय क्षेत्र को भी इनके समान दर्जा दिया जाए।

संदर्भ

1. दुबे, लक्ष्मी नारायण "भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका" जुलाई -दिसंबर 1995, पृ.सं. 109-114
2. शुक्ला राजवीर "शोध प्रबंध" पी एच डी उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान मान्य विश्व विद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, 2011
3. Mantu baro, A Comparative Study of Leadership Qualities between Post Graduate Physical Education and General Education Students, IJSR 3(9) 2014.